जुलाई- २०२१ ISSN : 2229-5585

नमन
NAMAN

यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी सूची में क्रमांक- २४ पर नामांकित
सान्दर्भिक शोध-पत्रिका

सम्पादक

प्रो. श्रद्धा सिंह • डॉ. हिमांशु शेखर सिंह

वर्ष : १४ अंक : २५

नमनं वासुदेवाय नमनं ज्ञानराशये।
नमनं प्रीतिकीर्तिभ्यां नमनं सर्वभूतये।।

नमन

Naman

प्रो. वासुदेव सिंह स्मृति न्यास द्वारा प्रकाशित
यू.जी.सी. केयर की बहु-विषयी (Multidisciplinary)
सूची में क्रमांक- २४ पर नामांकित सान्दर्भिक अर्द्धवार्षिक
शोध-पत्रिका
ISSN : 2229-5585

सम्पादक

डॉ. श्रद्धा सिंह
प्रोफेसर– हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

डॉ. हिमांशु शेखर सिंह
सह आचार्य– हिन्दी विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय
प्रयागराज

अनुक्रम

सम्पादकीय

स्मृति और भक्ति

१. शून्य
प्रो. जयदेव सिंह १

२. प्रो. भगवती प्रसाद सिंह भक्ति का निर्भय साँचा ६
प्रो. वासुदेव सिंह

३. श्रीमद्भगवद्गीता में भक्ति-साधना ११
डॉ. विमलेश कुमार मिश्र

४. भक्तिकाल की उपलब्धियाँ १५
डॉ. ऋतु वार्ष्णेय गुप्ता

५. रामकथा का उद्भव और विकास २१
डॉ. अरविन्द कुमार

६. सूर-सुधा : एक मूल्यांकन २९
डॉ. सुमन तिवारी

७. प्रो. वासुदेव सिंह की साहित्येतिहास-दृष्टि ३५
डॉ. श्रद्धा सिंह

गद्य-विमर्श

८. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य की साझी विरासत में बदलते मूल्य ४०
डॉ. पठान रहीम खान

९. सियाराम शरण गुप्त की काव्येतर कृतियों में 'गाँधीवाद' ४५
डॉ. संध्या द्विवेदी

१०. मन्नू भण्डारी : जीवन-व्यक्तित्व ४८
राम अशीष यादव

११. मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक समस्याएँ ५३
डॉ. दिग्विजय मा. टेंगसे

१२. भीष्म साहनी की कहानियाँ : रचनात्मक-अन्तर्दृष्टि ५७
डॉ. हिमांशु शेखर सिंह

भक्तिकाल की उपलब्धियाँ

डॉ. ऋतु वार्ष्णेय गुप्ता*

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का पूर्वमध्य युग 'भक्तिकाल' के नाम से अभिहित किया जाता है। इस भक्तिकालीन साहित्य की आत्मा 'भक्ति' है, इसका जीवन-स्रोत 'रस' है और इस रस का लक्ष्य 'सर्वोच्च मानवतावाद' की प्रतिष्ठा है। तत्कालीन जनजीवन में व्याप्त विषाद, नैराश्य तथा कुण्ठाओं का विगलन इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। सदियों पूर्व इस साहित्य में चर्चित समन्वयवादिता, भावनात्मक एकता व सांस्कृतिक अभिन्नता अनुकरणीय है। अनुभूतियों की गहनता और उसके निश्छल प्रकाशन तथा भाव-प्रवणता की दृष्टि से भक्तिकालीन साहित्य अत्यंत उत्कृष्ट है। काव्यादर्श, विषयवस्तु से उत्कर्ष, काव्य-सौष्ठव, रूप व शिल्प-विधान के प्रकर्ष, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के स्पष्ट प्रतिफलन तथा श्रेय एवं प्रेय– सब दृष्टि से यह साहित्य सर्वोत्तम बन पड़ा है। निर्गुण और सगुण धाराओं में प्रवाहित भक्तिकाव्य ने इस काल के साहित्य को भारती के भाल का गौरव बना दिया है।

निर्गुण संतकाव्य

संत कवियों ने एकेश्वरवाद में आस्था व्यक्त करते हुए निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का संदेश दिया। संतों ने अनेक सम्प्रदायों– सिद्धों, नाथों, सूफियों तथा अद्वैतवाद, वैष्णवों के प्रभाव को आत्मसात् कर निराकार भक्ति का एक समन्वित रूप प्रस्तुत किया। सामाजिक स्तर पर संतों ने पाषण्ड एवं अंधविश्वास का पूरी दृढ़ता के साथ खण्डन किया। मिथ्या आडम्बरों के प्रति जैसी अनास्था इन संत कवियों ने व्यक्त की, वैसी न तो पहले कभी कोई समाज-सुधारक कर सका था और न परवर्ती युग में ही किसी का वैसा साहस हुआ। इन कवियों ने तत्कालीन समाज में एक प्रकार की वैचारिक क्रांति को जन्म दिया, जिसका उच्च तथा निम्न समाज के सभी वर्गों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जाति-पाँति का विरोध, अर्धशून्य परम्पराओं, रूढ़ियों और आडम्बरों का खण्डन, मानव मात्र की समानता तथा एकता आदि इनकी मान्यताएँ थीं। इस प्रकार, हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश में सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों के विरूद्ध यह पहला नवजागरण था, जिसके नायक थे– कबीर। संत-साधना वैयक्तिक और आध्यात्मिक होते हुए भी समष्टिपरक है। प्रवृत्ति और निवृत्ति– दोनों पर समान बल देते हुए संतों ने एक आदर्श जीवन-दृष्टि प्रस्तुत की। धर्म, दर्शन, साधना तथा चरित्र-निर्माण के लिए संतों के पास अपना निजी संदेश और आदर्श है। वे धर्म के क्षेत्र में संकीर्णता के विरोधी थे, दर्शन के क्षेत्र में अद्वैत दृष्टि से एकेश्वरवाद के समर्थक थे। भक्ति-साधना के क्षेत्र में ये प्रेममूलक कर्मकाण्ड-रहित सहज साधना में विश्वास रखते थे और चरित्र-निर्माण के लिए आचरित सत्य को जीवन-निर्माण की कसौटी मानते थे।

संतों के पास एक स्वस्थ समन्वय दृष्टि थी। संतों ने जिस रूप में अपने विचार व्यक्त किए हैं, उनका आधार कोई एक विचारधारा या मतवाद नहीं है। अद्वैतवाद, वैष्णवों की भक्ति-भावना, सिद्धों-नाथों की सहज साधना आदि का जिस रूप में उन्होंने समन्वय किया, वह सर्वजन-सुलभ और सामाजिक स्तर पर सर्वजन-ग्राह्य थी। इन संत कवियों की आत्मानुभवमयी सत्यव्रती दृढ़वाणी ने मानव को रूढ़ शास्त्र-परम्पराओं से मुक्त किया तथा सहज साधना की प्रतिष्ठा की।

* सहायक आचार्य– हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली